Index

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

January - 2020
Vol. I No. 13

EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

January - 2020
Vol. I No. 13

EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD

Scanned with OKEN Scanner

अनुवाद का स्वरूप एवं परंपरा
प्रा. डॉ. जाधव के. के. 85

हिंदी भाषा और अनुवाद
शारदा आशन्ना बाचलकर 88

दलित उत्पीडन की दास्तान बयान करता : 'जीवन हमारा'
प्रा.डॉ. शेख मुखत्यार 90

अनुवाद औ भारतीय भाषाओं का अंतः संबंध
प्रा. डॉ. उत्तम जाधव 93

हिंदी भाषा और अनुवाद
प्रा.डॉ. जाधव अर्जुन रतन 96

हिंदी भाषा और अनुवाद
डॉ. अलका एन. गडकरी 101

अनुवाद : एक सामाजिक परिवर्तन
वर्षा प्रल्हाद गायगोले 104

हिंदी भाषा और अनुवाद
प्रा. डॉ. गिरी डी. व्ही. 107

'शुक्र ग्रह देख रहा है' अनुदित विज्ञान कथा
डॉ.मीना खरात 110

हिंदी भाषा और अनुवाद
डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर 112

हिंदी में अनुवाद; राष्ट्र की शान
डॉ. संतोष पवार 114

दलित आत्मकथात्मक उपन्यास, 'छोरी कोल्हाटी' का एवं 'जीवन हमारा' में व्यक्त दलित विमर्श
प्रा.डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद 118

हिंदी अनुवाद राश्ट्रीयता की पहचान
डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड 122

अनुदित साहित्य का महत्व एवं आवश्यकता
प्रा.डॉ.न.पु.काळे 126

Scanned with OKEN Scanner

हिंदी अनुवाद राश्ट्रीयता की पहचान

डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड

भारत की विविधता में एकता का स्वर प्राचीन काल से सुनाई देता है। यह विविधता हर क्षेत्र में भी है । इस विविधता को एकता की कडी में जोडने का काम एवं इस विविधता में एकता के स्वर को निरंतर बल देने का कार्य अनुवाद कला ने किया है आपस के साहित्यिक परिचर से राश्ट्रीय सामंजस्य की भावना सवंर्धित होती है । इससे भाशा एवं साहित्य समष्द होता है। इस दषिट से अनुवाद का महत्व अत्याधिक एवं स्वीकष्त हो चुका है । राश्ट्रीयता के संवर्धन, परस्पर तुलनात्मक अध्ययन तथा नये राश्ट्रीय साहित्य के प्रणयन में अनुवाद कला ने बहुत बडा योगदान दिया है ।

अनुवाद की पष्श्टभूमि के संदर्भ में अगर कहा जाए तो यह स्थिति स्थूल रूप से उन्नीसवीं षताब्दी के पूर्वार्ध तक रही जिसमें अनुवाद मुख्य रूप से व्यक्तिगत रूचि से प्रेरित अधिक था, सामाजिक आवष्यकता से प्रेरित कम। समयानुसार अनुवाद कला एवं उसकी बढती लोकप्रियता के कारण अनुवाद प्रधान रूप से एक सामाजिक आवष्यकता बन गई। विविध प्रकार के लेखनों के अनुवाद होने लगे कालांतर में अनुवाद कार्य की ओर लोग एक व्यवसाय के रूप से देखने लगे । अनुवादकों को प्रषिक्षित करणे के लिए विविध प्रकार से प्रयास किये जाने लगे। इसका विपरित परिणाम भी देखा जा सकता है । की अनुवाद क्षेत्र के प्रति सामाजिक दषिटकोन में बदलाव आया।

मुलतः ज्ञानात्मक दषिट से अनुवाद सिध्दान्त के विकास को विषेश बल मिला इस कारण इस सिध्दान्त का विकसीत रूप आज हम देख सकते है। अनुवाद के अर्थ की दषिट से अगर देखे तो कोष के अनुसार अनुवाद का अर्थ "पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना।"[1] अंग्रेजी में अनुवाद के लिए " षब्द प्रयोग होता है । डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार "एक भाशा में व्यक्त विचारों को, यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाशा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है ।"[2]

अनुवाद के प्रति उसकी पष्श्ठभुमी या उसकी अर्थगत विषेशताओं के संदर्भ में कई भाशागत विद्वानों ने अपने कई प्रकार के मत स्थापीत किये है, इस संदर्भ में प्रचुर मात्रा में अध्ययन किया जा चुका है लेकिन मुल रूप से अनुवाद से जुडें कुल तथ्यों का अध्ययन तथा उसका राश्ट्रीयता में क्या योगदान मिलता है इस दषिट से भी अध्ययन होना आवष्यक है । "भारतीय साहित्य की आधारभूत भारतीयता या एकता से परिचय होना तथी संभव होता है जब हम उसे अनेकता या भारतीय साहित्य की विविधता के संदर्भ में समझाने का प्रयत्न करते है । पष्चिमी विचारधारा प्रत्येक समस्या को द्वि आध

Scanned with OKEN Scanner

प्रतिमुख्यता में बदल देती है. और इसके विपरीत भारतीय मन जीवन की
कल्यवादी दष्टी में विष्वास करता है और परिणामतः एकता अनेकता जैसे विरूध्दों
समुह को एक दूसरे के संपूरक के रूप में स्वीकार करना सहज हो जाता है और
ानीय, प्रांतीय तथा सर्व भारतीयता तथा राश्ट्रीयत्व अस्मिता में एक सजीव संबंध
ापित करना संभव हो पाता है । भारतीय साहित्य अपनी एकता में विविधता को
ीकार करते हुए प्रदर्षित करता है । और यही विष्व को भारत की देन है । अनेकता
एकता की ओर ले जानेवाला यह मॉडल भारत की अनन्यता है ।''[3]

अनुवाद के माध्यम से भाशा, साहित्य और समाज के विकास की पुरजोर षुरूवात
ारतेन्दु के समय से मानी जाती है । यह परंपरा स्वातंत्रता आंदोलन के समय तक
लती रही । जिसने हिंदी भाशा और साहित्य के विकास में योगदान देने के अलावा
मारी समझ और सोच का व्यापक विस्तार किया । अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत, मराठी,
र्दु, फारसी से हो वाले साहित्यिक अनुवादों में हिंदी के लगभग सभी बडे रचनाकार
क्रिय रहे । इन सब ने हिंदी को नये विशय, नये मुहावरे दिए, नए ज्ञान और दुनिया
के भूगोल से विष्व की वैविध्यशरक संस्कृति से साहित्य और हिंदी को जोडा।

साहित्यिक अनुवाद से यह लाभ हुआ है कि जो अच्छी अंग्रेजी, बंगाली मराठी या
न्य भाशा नहीं जानते या पढ नही सकते, वे लोग अनुवादीत साहित्य पढकर ही अपना
ज्ञान क्षेत्र बढा रहे है । साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक की क्षमता स्पश्ट दिखाई पडती
है । जैसे वाटरकाप हाउस कहानी 'अल्बर्ट और उसका जहाज' का अनुवाद सुधा अरोडा
और जितेन्द्र भाटिया ने किया है । 'चार्ली चैप्लिन' का अनुवाद सूरज प्रकाष और गीत
चतुर्वेदी दोनों ने किया है और दोनों के अनुवाद को देखा जाए जो उनमें बहुत अंतर है ।
इसलिए साहित्यिक अनुवाद बहुत जिम्मेदारी का कार्य है। अनुवाद करते समय मूल कथ्य
को पकडना, अनुवादक के ज्ञान पर निर्भर करता है। भाशा षब्द और संवेदना अलग होती
है । अरूंधती राय के 'गॉड ऑफ स्माल थिंक्स का अनुवाद मूल रचना से बिलकुल अलग
हो गया । इसका कारण यह है कि आलोचना की और सृजनात्मक लेखन की भाशा
अलग होती है । कई बार दक्ष अनुवादक इतना अच्छा अनुवाद करते है कि वह मूल रचना
से भी बेहतर होती है । उदाहरण के लिए किरण बजाज की रचना 'करीब आ रहे है हम'
का एक ही पृश्ठ पर हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद छपा है । उन्हें साथ साथ देखो तो लगता
है कितना अद्‌भुत अनुवाद किया गया है । जिसने अनुवाद किया है वह निश्चित रूप से
स्वयं भी कवि रहा होगा ऐसा अनुवाद रचना को उँचाई प्रदान करता है ।

प्रत्येक समाज की अपनी अपनी संस्कषति होती है । संस्कषति याने समाज की
परंपराएँ, आचरण , सभ्यताएँ आदि और यह सभी बाते भाशा से जुडी होने के कारण

Scanned with OKEN Scanner

भाशा ही हर समाज को संस्कषति को समझाने का माध्यम होती है । यदि इस संस्कषति सभ्यता को समझना है तो सब से पहले उस भाशा का अध्ययन करना आवष्यक होता है तभी किसी भी साहित्य को समझा जा सकता है और इस समस्या का हल अगर कोई है तो अनुवाद यह सषक्त माध्यम उभरकर आया । भाशा अपने आप में मनुश्य की भावनाओं का अनुवाद है । यह मनुश्य की एक मानवीय आवष्यकता भी है। महत्वपुर्ण तथ्य यह है कि साहित्यिक अनुवाद हमारी सांस्कषतिक जरूरत है ।

वर्तमान समय में हिंदी और अन्य भारतीय भाशाओं में प्रचुर मात्रा में अनुवाद हो रहा है । यहाॅ यह तथ्य कहने लायक है कि अहिंदी भाशी पाठक हिंदी की कषतियों को हिंदी मे हि पढ लेता है । इसलिए हिंदी के अनुवाद की उतनी आवष्यकता न हो, परंतू सामूहिक रूप से, विषाल परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो यह एक राश्ट्रीय आवष्यकता है । राश्ट्रीयता के संदर्भ में आज अनुवाद यह बहुत आवष्यक बनता जा रहा है ।

प्राचीन काल के समय से वर्तमान समय तक के इस अनुवाद कला मे भी परिवर्तन दिखाई देता गया जैसे की वर्तमान युग में जो विभिन्न तकनिकीकरण से लेखन होने लगा है वह बहुत अचंभित कर देने वाला है । आज प्रिंट मिडीया हो या इंटरनेट, कॅम्प्युटर के विभिन्न अविश्कार हो वह चौका देनेवाला हैं । आज के समय इंटरनेट पर विभिन्न प्रकार के जो सॉफ्टवेअर्स है वे दुनियाॅ के बहुत सी भाशा को पलभर में अपनी भाशा में साहित्य को अनुवादित कर देने वाले है और इस अविश्कार के कारण दुनियाॅ के विभिन्न भाशी साहित्य हमे अपनी भाशा में ज्ञात होने लगा है । अन्य राश्ट्र की संस्कषति परंपराओं का अध्ययन हम सहज रूप से कर पा रहे है ।

इसी प्रकार से हम कह सकते है कि यदि साहित्यिक कषतियों का अनुवाद नही होता, तो इतने बडे राश्ट्र में अन्य राज्यों मे क्या साहित्य सष्जन हो रहा है, उसका हमें पता ही नहीं चलता । अनुवाद के कारण आज हम सभी भारतीय भाशाओं के साथ साथ विदेषी भाशाओं के साहित्य से परिचित है ।

भारत के प्रसिध्द उद्योगपति वेणूगोपाल धूत लिखते है । के ''भाशाओं की समषध्दि के साथ लोक संस्कषति और साहित्य को भी प्रतिश्ठा मिलती है । महाराश्ट्र में संत रामदास, तुकाराम आदि के साहित्य ने सबको जोडने का काम किया है । 'थिंक ग्लोबली, एक्ट लोकली' यही हमारी स्थानीक भाशाओं का मूल स्वर है । जिस तरह थोडे से अंग्रेजो की भाशा अंग्रेजी वैष्विक भाशा हो गयी, उसी तरह हमे भी अपनी भाशाओं के विकास को और आगे बढाना है । हमारे साहित्य को अंग्रेजी में अनुवाद कर विष्वभर में पहूंचाने की बहोत आवष्यकता है यदि रविंन्द्रनाथ टेगौर की गीतांजलि का अंग्रेजी में अनुवाद न हुआ होता तो षायद उसे नोबल पुरस्कार भी नहीं मिलता ''[4]

Scanned with OKEN Scanner

अनुवाद की कुछ समस्याएँ भी है जैसे की षब्द प्रयोग की समस्या, मुहावरें, लंकार, षैली अदि में कई समस्याएँ उत्पन्न होती है लेकिन अच्छे अनुवादक के पास ब्द भंडार अच्छा हो तो इन समस्याओं का समाधान वह खुद ढूंढ लेता है । अनुवादक के पास भाशा का ज्ञान, विशय का ज्ञान, अभिव्यक्तिगत तटस्थता होनी आवष्यक है।

भारत की भाशाओं के दो अस्तित्व है ' पहला भाशिक और दूसरा सांस्कषतिक, जो भाशा को अतिकमित कर प्रकट होता है । यही कारण है की फारसी और अंग्रेजी भाशाएँ भारतीय नही होने पर भी इन भाशाओं मे रचित साहित्य को भारतीय साहित्य मे स्थान मिलता है ।

भारतीय साहित्य भारतीय लोंगो की सम्पुर्ण अभिव्यक्ति का इतिहास है । उनकी साहित्यिक परंपराओ, परिवर्तन और परिणति, उत्थान एवं पतन पुनरूत्थान का इतिहास है ।

अंततः भारतीय राश्ट्रीय साहित्यिक मूलभूत संकल्पना को साकार बनाने के लिए अंतरभाशिय अनुवाद प्रकिया को प्रभावी बनाना होगा । भारतीय जनमानस में राश्ट्रीय चेतना और सांस्कषतिक समन्वय का प्रचार करणे के लिए भारतीय साहित्य को ही अनुवाद के माध्यम से सकिय करना होगा । भारतीय साहित्य जो कि भारत की सभी भाशाओं में रचित साहित्य का समुच्चय है, एक सम्मिलित स्वरूप है। इसे हर भारतीय नागरीक को आत्मसात करना आवष्यक है हमारा राश्ट्रीय साहित्य किसी एक भाशा में रचित साहित्य नही है बल्कि यह एक समावेषी और एकत्रित साहित्य के रूप में है जो कि समुचे भारत राश्ट्र की अस्मिता को अपने भीतर समेटे हुए है । भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता अनुवाद के माध्यम से ही साध्य है ।

संदर्भ

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिध्दान्त और प्रयोग, दंगल झाल्टे , पष्. सं. 100
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिध्दान्त और प्रयोग, दंगल झाल्टे , पष्. सं. 105
3. तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य, इंद्रनाथ चौधुरी, पष्सं. 99
4. महाराश्ट्र की अस्मिता प्रादेषिक नहीं, दैनिक यषोभुमि, वेणूगोपाल धूत संपा. आनंद राज्यवर्धन, दि.27 नवं. 2011 मुंबई, पष् सं. 03

डॉ.नितीन रंगनाथ गायकवाड

Scanned with OKEN Scanner